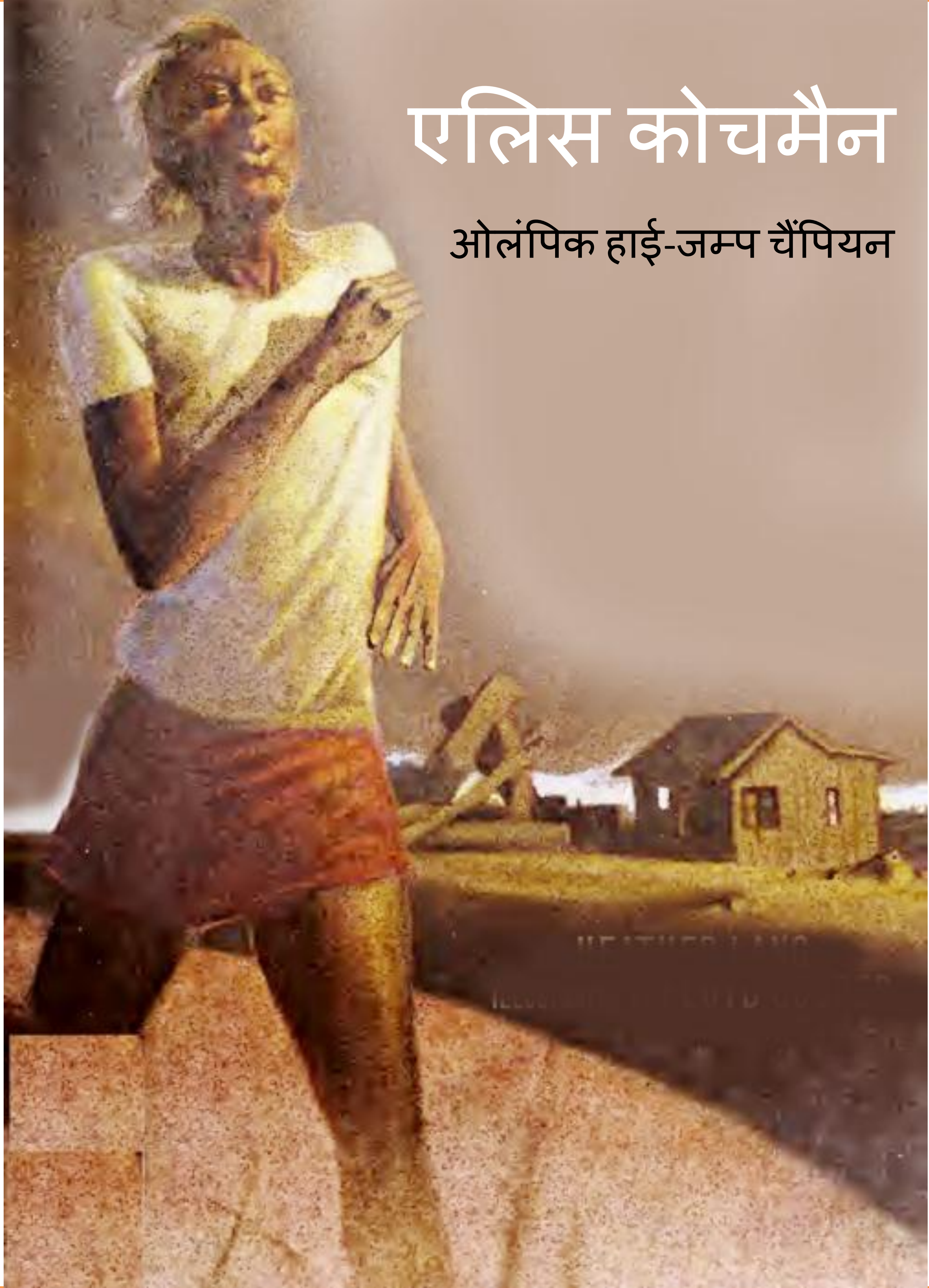
एलिस कोचमैन

ओलंपिक हाई-जम्प चैंपियन



जब एलिस कोचमैन एक युवा महिला थी, पर क्योंकि वो अश्वेत थीं इसलिए ज्यादातर गोरे लोग उससे हाथ तक नहीं मिलाते थे. लेकिन जब इंग्लैंड के राजा ने उसके गले में ओलंपिक पदक डाला, तो उन्होंने एलिस को बधाई देने के लिए अपना हाथ बढ़ाया. लंदन के वेम्बली स्टेडियम में पोडियम पर खड़ी एलिसन जॉर्जिया ने, अपने गांव के खेतों से एक लंबा रास्ता तय किया. बचपन में वो अपने गांव में नंगे पांव दौड़ती थी. रिकॉर्ड तोड़ने वाली छलांग के साथ, वो 9- ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली अफ्रीकी-अमेरिकी महिला बनी.

यह एक अश्वेत एथलीट की प्रेरणादायक कहानी है, जिसने पुरस्कार को कभी भी अपनी आँखों से ओंझल नहीं होने दिया.





एलिस कोचमैन

ओलंपिक हाई-जम्प चैंपियन





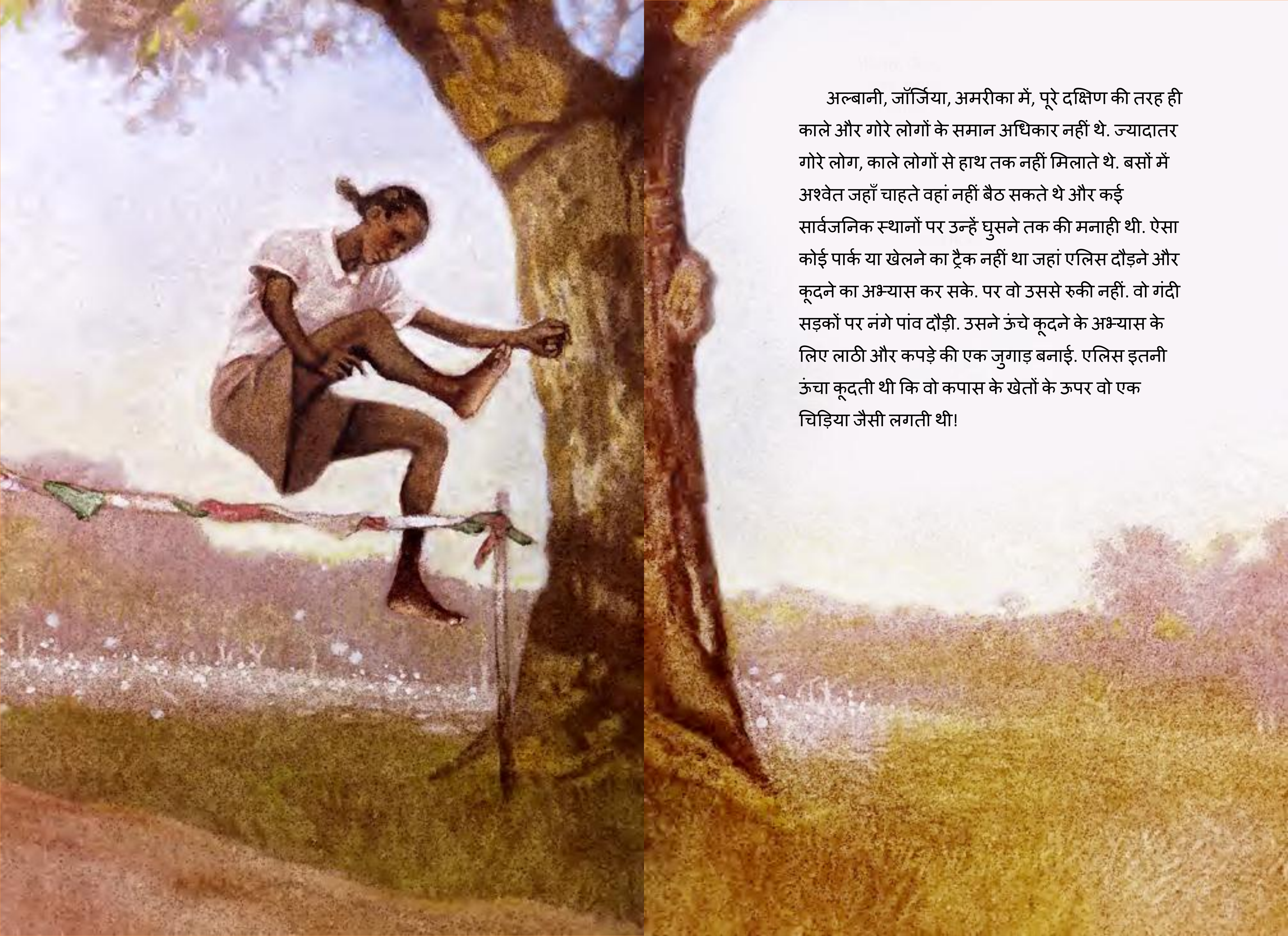


शायद एलिस कोचमैन तेज़ दौड़ने और ऊंचा कूदने के लिए ही पैदा हुई थी. सुबह को जब वो अपनी दादी रेचल के साथ घूमने जाती तो एलिस बहुत तेज़ी से खेतों में आगे निकल जाती थी. वो एक चट्टान से दूसरी चट्टान पर कूदती थी. वो अपने रास्ते में आने वाली सभी चीज़ों को कूदकर पार करती थी.

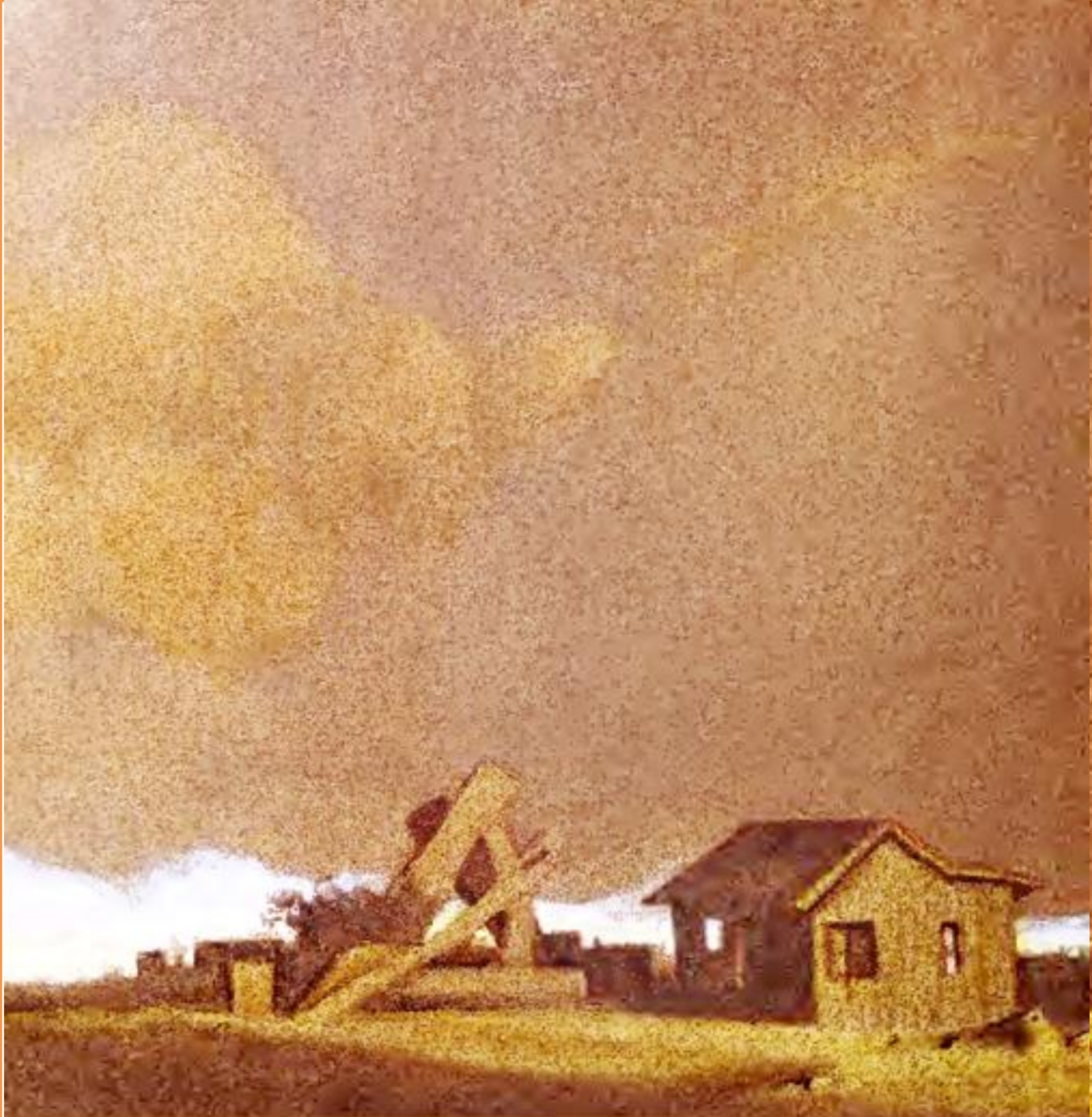
जब एलिस बड़ी हुई, तो पापा ने उससे दौड़ना और कूदना बंद करने को कहा. 1930 के दशक में, दौड़ना और कूदना लड़कियों के लिए ठीक नहीं माना जाता था. इसके अलावा, एलिस को घर में बहुत सारे काम करने पड़ते थे. वह मकई की रोटी और अंडे पकाने के लिए सुबह जल्दी उठती थी. स्कूल के बाद, वो कपड़े धोती थी और उन्हें सुखाने के लिए लटकाती थी. वो अपने बड़े भाइयों और बहनों के साथ खेतों में कपास और आड़ू तोड़ती थी और साथ में छोटे बच्चों की देखभाल भी करती थी.

उसके बावजूद एलिस सिर्फ दौड़ने और कूदने के बारे में ही सोचती थी. इसलिए अपने सारे काम ख़त्म करने के बाद वो लड़कों के साथ खेल, खेलती थी. लोग उसे एक "पागल मूर्ख" बुलाते थे. उसे पता था कि पापा उसे खेलने के लिए सजा देंगे. लेकिन फिर भी वो दौड़ने और कूदने का कोई भी मौका नहीं छोड़ती थी.





अल्बानी, जॉर्जिया, अमरीका में, पूरे दक्षिण की तरह ही काले और गोरे लोगों के समान अधिकार नहीं थे. ज्यादातर गोरे लोग, काले लोगों से हाथ तक नहीं मिलाते थे. बसों में अश्वेत जहाँ चाहते वहां नहीं बैठ सकते थे और कई सार्वजनिक स्थानों पर उन्हें घुसने तक की मनाही थी. ऐसा कोई पार्क या खेलने का ट्रैक नहीं था जहां एलिस दौड़ने और कूदने का अभ्यास कर सके. पर वो उससे रुकी नहीं. वो गंदी सड़कों पर नंगे पांव दौड़ी. उसने ऊंचे कूदने के अभ्यास के लिए लाठी और कपड़े की एक जुगाड़ बनाई. एलिस इतनी ऊंचा कूदती थी कि वो कपास के खेतों के ऊपर वो एक चिड़िया जैसी लगती थी!



जब एलिस सातवीं कक्षा में थी, तो हाई-स्कूल के स्पोर्ट्स कोच का उसकी प्रतिभा पर ध्यान गया. उन्होंने एलिस के माता-पिता को आश्वस्त किया कि वे टीम के साथ एलिस को अलबामा की प्रसिद्ध टस्केगी रिले में जाने दें. वहाँ वो देश भर के चोटी के काले एथलीटों के खिलाफ प्रतिस्पर्धा कर सकेगी. अपने जीवन में पहली बार, एलिस ने अल्बानी छोड़ा. उसने पहले कभी भी, ट्रैक के जूते नहीं पहने थे, और न ही वो कभी एक असली हाई-जंप बार (डंडे) पर कूदी थी. एलिस ने हाई-स्कूल और कॉलेज की लड़कियों को पछाड़कर वहां पहला स्थान हासिल किया.



एलिस ने अपनी प्रतिभा केवल रेस में रिबन जीतने के लिए ही नहीं उपयोग की. 1940 में एक रात, एक बवंडर ने अल्बानी के घरों को नष्ट किया और कई लोगों को घायल किया. दो हफ़्तों तक एलिस ने एक बचाव-कर्मी के रूप में काम किया. वो इतनी तेज दौड़ती थी कि जब वो दूर स्थित लोगों को खाना पहुंचाती, तब भी वो गर्म होता. फिर किसी को नहीं लगा कि एलिस पागल या मूर्ख थी.



उस वर्ष, टस्केगी इंस्टीट्यूट के ट्रैक कोच ने एलिस के माता-पिता की रज़ामंदी से एलिस से हाई स्कूल की पढ़ाई खत्म करवाई. टस्केगी इंस्टीट्यूट में सभी अश्वेत छात्र थे और वो स्कूल अपनी उत्कृष्ट पढ़ाई और एथलेटिक्स के लिए मशहूर था. टस्केगी ने एलिस को उसकी ट्यूशन फीस कवर करने के लिए छात्रवृत्ति दी. अपने कमरे और खाने के पैसे चुकाने के लिए एलिस, वहां व्यायामशाला और पूल की सफाई करती थी, मिट्टी के टेनिस कोर्ट को सपाट बनाती थी और वर्दी सिलती थी.

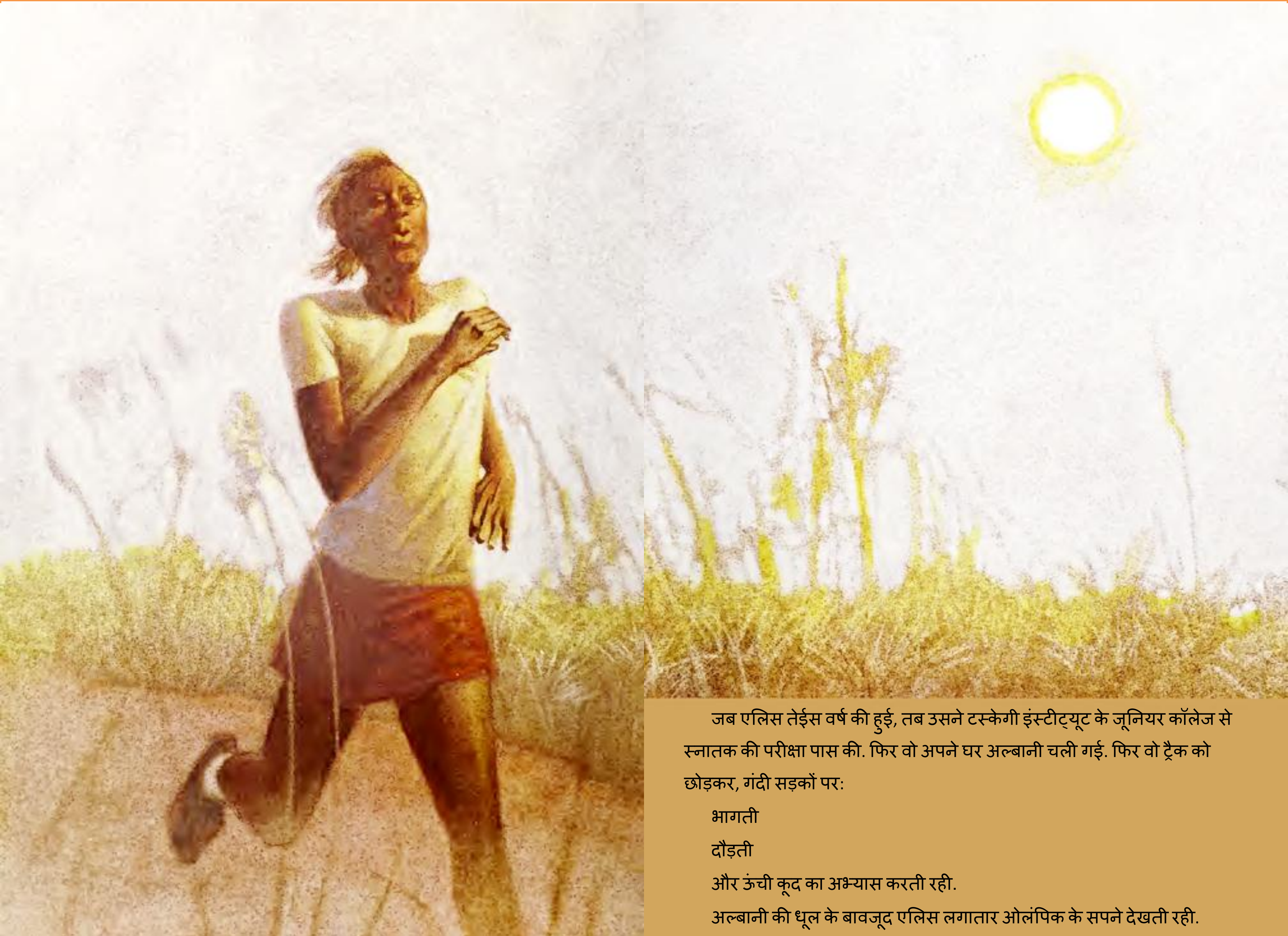
एलिस को अपने परिवार की बहुत याद आती थी और वो उनके बारे में बहुत चिंता करती थी. गरीबी के कारण उनके लिए एलिस के संपर्क में रहना मुश्किल था. कभी-कभी कोच एलिस को डाक टिकट देते थे ताकि वो घर पत्र लिख सके. एक बार एलिस अचानक घर गई, पर उसका परिवार एक दूसरे घर में शिफ्ट हो गया था.





एलिस ने ट्रैक और फील्ड, और बास्केटबॉल के लिए प्रतिस्पर्धा की. तब खेल और मीटिंग के लिए यात्रा करना आसान नहीं था. अधिकांश रेस्तरां और गैस स्टेशन काले लोगों की सेवा नहीं करते थे. एक बार जब एलिस ने एक चोटी के सफेद धावक के खिलाफ दौड़ जीती, तो स्टैंड में कुछ लोगों ने उस पर बर्फ फेंकी. लेकिन एलिस की गति उससे बिल्कुल धीमी नहीं हुई. ऊंची कूद .. 50 मीटर, .. 100 मीटर ... 400 मीटर की रिले... उसने वहां सभी रेसें जीतीं. उसने तीन बार लागतार बास्केटबॉल टीम का नेतृत्व किया और चैंपियनशिप जीती.

एलिस ने साबित कर दिया था कि वो देश का सबसे अच्छी हाई-जम्पर और सबसे तेज धावक थी. ओलंपिक में वो क्या कर सकती थी? दुनिया को अब वो दिखाने को तैयार थी. लेकिन वो 1944 का साल था, और द्वितीय विश्व युद्ध यूरोप के टुकड़े-टुकड़े कर रहा था. युद्ध के कारण ओलंपिक खेलों को रद्द कर दिया गया था.



जब एलिस तेईस वर्ष की हुई, तब उसने टस्केगी इंस्टीट्यूट के जूनियर कॉलेज से स्नातक की परीक्षा पास की. फिर वो अपने घर अल्बानी चली गई. फिर वो ट्रैक को छोड़कर, गंदी सड़कों पर:

भागती

दौड़ती

और ऊंची कूद का अभ्यास करती रही.

अल्बानी की धूल के बावजूद एलिस लगातार ओलंपिक के सपने देखती रही.



युद्ध की समाप्ति के बाद एलिस को आखिरकार एक मौका मिला. 1948 के ओलंपिक में ऊंची कूद के लिए एलिस ने क्वालीफाई किया. वैसे एलिस इससे पहले कभी ऊंची कूद की प्रतियोगिता हारी नहीं थी, लेकिन वो इस बार जीतेगी इसपर उसे शक था. वर्षों के कठिन प्रशिक्षण ने उसकी पीठ को कमजोर कर दिया था, और अब उसके लिए कूदना काफी दर्दनाक था. लेकिन इस क्षण के लिए उसने जीवन भर संघर्ष किया था.

अपने ओलंपिक साथियों के साथ, एलिस इंग्लैंड जाने के लिए पानी के जहाज़ एसएस-अमेरिका पर सवार हुई. महासागर में सात दिवसीय यात्रा के दौरान एलिस दुनिया भर के लोगों से मिली. एक रात एथलीट, सभी यात्रियों के मनोरंजन के लिए ज़िम्मेदार थे. इसलिए एलिस ने "सेंट लुइस ब्लूज़" नृत्य किया.



लंदन में, एलिस एक कॉलेज के परिसर में अन्य एथलीटों के साथ रही. वे सभी एक साथ रहते थे — काले और सफेद - क्योंकि उनके सपने एक-दूसरे से जुड़े हुए थे.

युद्ध ने शहर का काफी सत्यानाश किया था. बमबारी के कारण सड़कों पर मलबे के ढेर थे. इंग्लैंड में अधिकांश लोगों भोजन की गंभीर कमी का सामना कर रहे थे. एलिस और अन्य एथलीट भी अक्सर भूखे-प्यासे रहते थे.

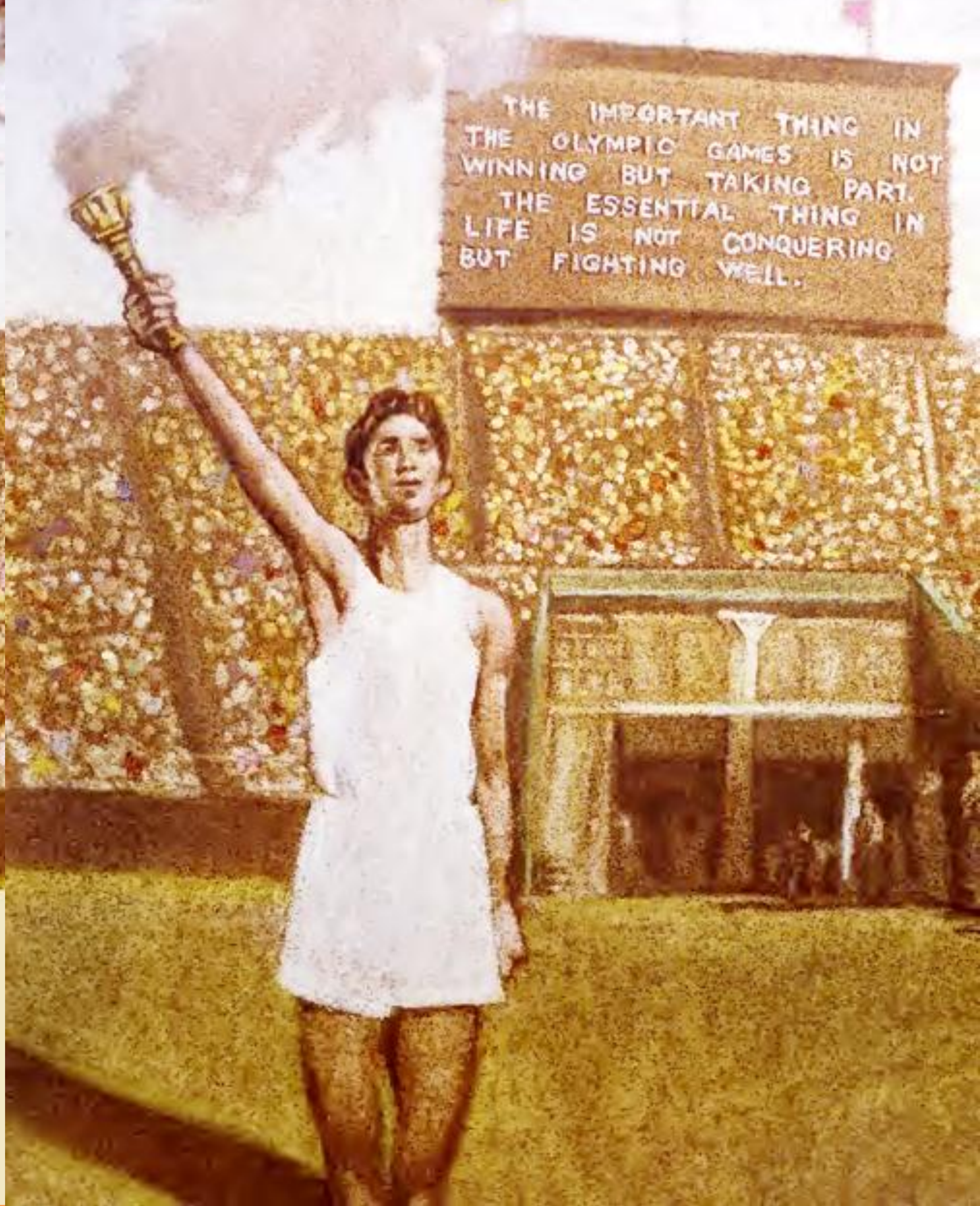
इंग्लैंड की ठंड एलिस को सुइयों की तरह चुभती थी, लेकिन फिर भी एलिस दिन में कड़ा अभ्यास करती थी. और जब उसे समय मिलता तब वो बस लेकर लंदन और आसपास के शहरों में घूमती थी. इंग्लैंड में एलिस बस की किसी भी सीट पर बैठ सकती थी. उसे इंग्लैंड के देहात और गांव बहुत पसंद आए.



लंदन में लोगों को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा उसके बावजूद, ओलंपिक उद्घाटन समारोह शानदार रहा. एलिस ने वेम्बली स्टेडियम में, अन्य एथलीटों के साथ अस्सी-पच्चीस हजार दर्शकों की तालियों के साथ मार्च किया. इंग्लैंड के राजा ने ओलंपिक खेलों के आरम्भ की घोषणा की, और हजारों कबूतरों को स्टेडियम में रिहा किया गया. एलिस ने कभी भी इतने सारे पक्षियों को आकाश में उड़ते हुए नहीं देखा था.

महत्वपूर्ण बात ओलंपिक खेलों में भाग लेना है, उनमें जीतना नहीं.

जीवन में आवश्यक चीज विजय नहीं, बल्कि अच्छी तरह से लड़ना है.





एलिस को अपनी बारी के लिए आठ दिन का इंतजार करना पड़ा. एक-एक करके उसके सभी साथी अपने-अपने ट्रैक इवेंट्स हार गए. प्रत्येक नुकसान के बाद एलिस अधिक दृढ़ हुई. जो कोई भी मुझे हराएगा उसे एक नया वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाना होगा! उसने सोचा.

एलिस महिलाओं और ट्रैक के क्षेत्र में स्वर्ण पदक के लिए अमेरिका की आखिरी उम्मीद बची थी. उसकी सबसे कठिन प्रतियोगी, ग्रेट ब्रिटेन की डोरोथी टायलर थी. इंच-इंच के लिए वे एक-दूसरे से जूझती रहीं - 5 फीट 3-2/5 इंच, 5 फीट 4-1/2 इंच. लैंडिंग पिट में रेत बाहर गिर रही थी और कूदने से एलिस की पीठ में दर्द हो रहा था. 5 फीट 5-1/3 इंच.

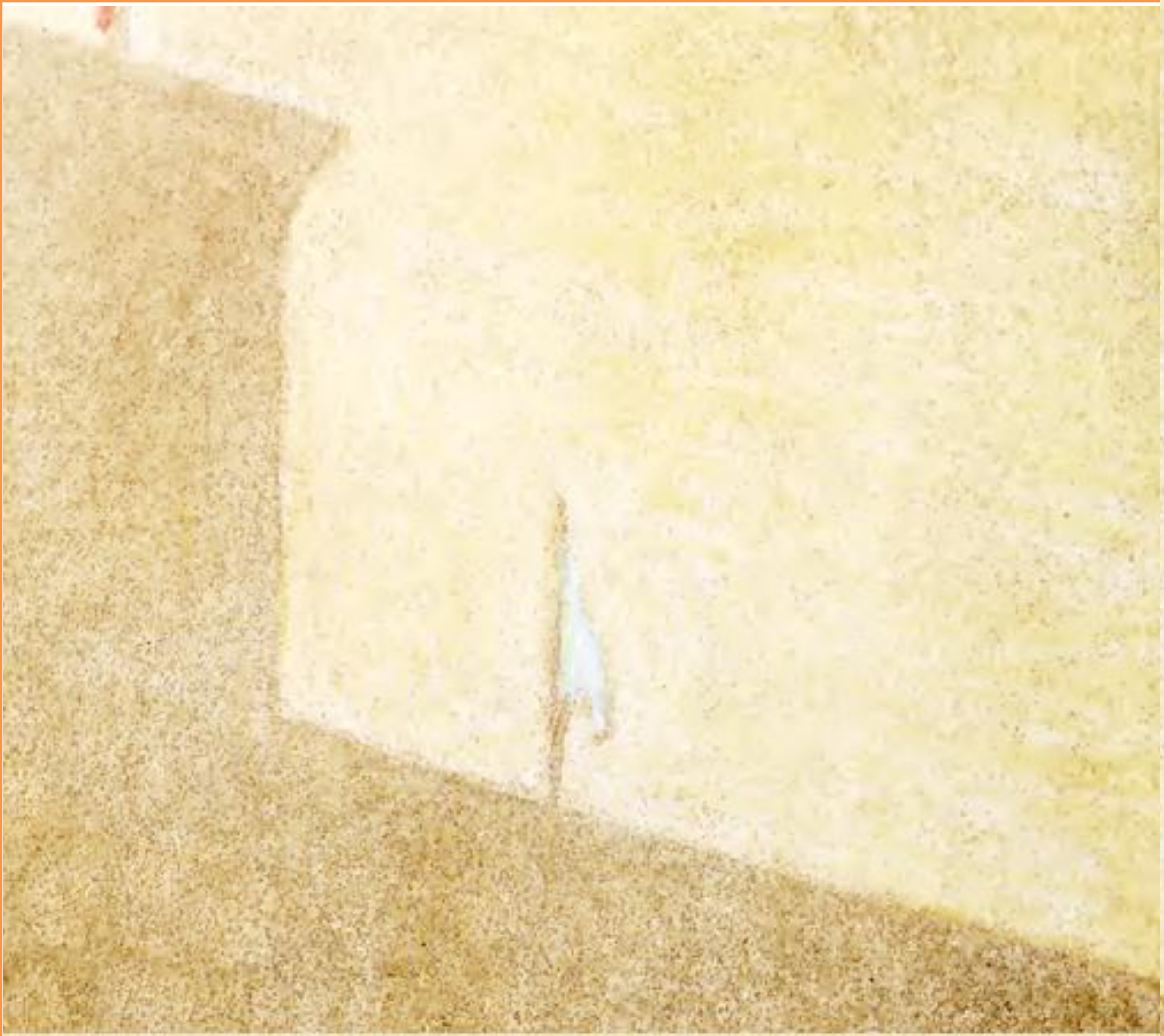
भले ही देर हो रही थी और अन्य सभी प्रतियोगिताएं समाप्त हो गई थीं, लेकिन इंग्लैंड के राजा और रानी और हजारों दर्शक उसका प्रदर्शन देखने के लिए रुके थे.



5 फीट 6-1/8 इंच. अब ऊंची-कूद का डंडा एलिस जितना ही ऊंचा था. उसने इससे पहले कभी किसी प्रतियोगिता में उतनी ऊंची छलांग नहीं लगाई थी. एलिस ने कूद पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित किया.

उसने तेज़ी से दौड़ते हुए अपनी बाहों को पंप किया.

उसने धक्का मारा और फिर ऊपर उड़ी ... ऊपर ... और ऊपर . . .डंडे के भी ऊपर. उसकी छलांग ने एक नया ओलंपिक रिकॉर्ड कायम किया!





डोरोथी कूदी पर ... .. चूक गई. लेकिन हरेक खिलाड़ी (जम्पर) को प्रत्येक ऊँचाई को लांघने के लिए तीन मौके मिलते हैं, और डोरोथी ने अपने दूसरे प्रयास में डंडे को क्लियर किया.

अधिकारियों ने बार (डंडे) को 5 फीट 7 इंच तक ऊंचा किया. एलिस कूदी पर चूकी डोरोथी भी चूकी. तीन प्रयासों के बाद, कोई भी एथलीट डंडे को क्लियर नहीं कर पाया.

आगे क्या होगा? यह एलिस को पता नहीं था. ओलंपिक की ऊंची कूद में "बराबरी की टाई" नहीं होती है. फिर उसने बोर्ड पर अपना नाम देखा "कोचमैन - यूनाइटेड स्टेट्स." एलिस इसलिए जीती क्योंकि उसने अपनी पहली कोशिश में रिकॉर्ड तोड़ छलांग लगाई थी.

7 अगस्त, 1948 को; अल्बानी, जॉर्जिया की एलिस कोचमैन ओलंपिक स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली अफ्रीकी-अमेरिकी महिला बनी. जब एलिस पोडियम पर चढ़ी तब हजारों लोगों ने तालियां बजाईं. उसने अपने सपने को हासिल किया. वो सपना तब शुरू हुआ था जब वो एक छोटी लड़की थी और जॉर्जिया के खेतों में नंगे पांव दौड़ती थी.

इंग्लैंड के राजा ने उसे "स्वर्ण पदक" भेंट किया. "मुझे आप पर बहुत गर्व है," उन्होंने कहा. "बधाई! " फिर किंग जॉर्ज-VI ने एलिस से हाथ मिलाया.





एलिस कोचमैन के बारे में कुछ और

अधिकांश एथलीटों के लिए, सबसे बड़ी चुनौती अपने खेल में महारत हासिल करना होती है. लेकिन एलिस कोचमैन के लिए, खुद को को 5 फीट -6-इंच की डंडे के पार उछालना सबसे बड़ी बाधा नहीं थी. 1922 में जन्मी एलिस बहुत गरीब थी. वो जॉर्जिया में रहती थी, जहाँ अश्वेत लोगों के साथ गैर-बराबरी का व्यवहार होता था. सार्वजनिक स्थानों पर काले लोगों के लिए प्रतिबंध थे. दक्षिणी काले बच्चों को अधिकांश संगठित खेलों में भाग लेने की अनुमति नहीं थी. मामले को बदतर बनाने के लिए, 1930 के दशक में लड़कियों से घर के काम में मदद करने और विनम्र होने की उम्मीद थी. एलिस के पिता ने उसे भागने और कूदने के लिए कड़ी सजा दी. हालांकि, एलिस मानती थी कि इन भारी चुनौतियों ने, उसे दृढ़ संकल्प और दृढ़ता प्रदान की, जो उसे एक सफल ओलंपिक एथलीट बनने के लिए आवश्यक थी.

एक असाधारण धावक और जम्पर, एलिस ने "ट्रैक की रानी," "परमाणु एलिस," “ट्रैक ऐस”, और "टस्केगी फ्लैश“ जैसे उपनाम कमाए. शायद उसने 1940 और 1944 के ओलंपिक में कई स्वर्ण पदक जीते होते, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के कारण दोनों को रद्द कर दिया गया था.

स्वर्ण पदक जीतने के बाद, एलिस नायिका के रूप में अपने शहर लौटी. जॉर्जिया में किसी अश्वेत व्यक्ति के लिए उत्सव आयोजित करना मुश्किल था, लेकिन उसके लिए एक विशेष पर्व का आयोजन किया गया. परेड 175 मील लम्बी थी. फिर भी दक्षिण में रंग-भेद कायम था. उसके स्वागत-सत्कार समारोह में, एलिस को भीड़ से बातचीत करने के लिए आमंत्रित नहीं किया गया. हाल में एक तरफ गोरे बैठे थे और दूसरी ओर अश्वेत. महापौर ने एलिस से हाथ तक नहीं मिलाया. फिर भी एलिस को कई गोरे लोगों का समर्थन मिला. उन्होंने उसे डाक के ज़रिए बधाई के गुमनाम उपहार भेजे.

1948 के ओलंपिक के बाद एलिस ने प्रतिस्पर्धा में भाग लेना बंद कर दिया लेकिन वो अन्य अच्छे काम करती रही. उसने अल्बानी स्टेट कॉलेज से अपनी डिग्री प्राप्त की. वो एक सामुदायिक स्वयंसेवक, एक माँ, एक शिक्षक और एक कोच बन गई. वो एक अंतरराष्ट्रीय प्रोडक्ट का समर्थन करने वाली पहली अश्वेत महिला बनी - जब कोका-कोला ने उसे अपने इश्तहारों में दिखाया. उसे आठ, हॉल ऑफ फेम की सदस्यता मिली, एलिस ने दस सीधी अमेरिकी राष्ट्रीय आउटडोर हाई-जंप चैंपियनशिप जीतीं, जो आज भी एक रिकॉर्ड है. 1998 में, उन्हें अल्फा कप्पा अल्फा सोरोरिटी के मानद सदस्य के रूप में शामिल किया गया, जो अफ्रीकी अमेरिकी कॉलेज-शिक्षित महिलाओं द्वारा स्थापित सबसे पुराना संगठन है.

एलिस अपनी सफलता का श्रेय अपने परिवार, शिक्षकों, कोचों और कभी-कभी ऐसे लोगों को भी दिया जिन्हें वो शायद ही जानती थी. दूसरों की मदद करने के लिए उसने "एलिस कोचमैन ट्रैक एंड फील्ड फाउंडेशन" की स्थापना की, जो युवा एथलीटों का समर्थन करती है और पूर्व ओलंपिक एथलीटों को खेल के बाद जीवन, जीने में मदद करती है.

कई लोग एलिस की कहानी को नहीं जानते हैं, क्योंकि उसे स्वर्ण पदक प्रसारण टेलीविजन के शुरुआती दिनों में मिला था. लेकिन वो एलिस कोचमैन ही थी जिसने भविष्य के ओलंपिक ट्रैक सितारों जैसे विल्मा रुडोल्फ, एवलिन एशफोर्ड और जैकी जोनर-केर्सी के लिए मार्ग प्रशस्त किया.



"जब स्थिति बहुत कठिन हो जाए और आपको ऐसा लगे कि आप उम्मीद छोड़ दें, तो आप उस आवाज़ को सुनें जो आपसे कहती होगी, "चलते रहो. रुको नहीं. हिम्मत और दृढ़ संकल्प आपको ज़रूर आगे खींचेगा.” — एलिस कोचमैन



एलिस कोचमैन अपने रिकॉर्ड तोड़ने वाली छलांग में डंडे को लांघते हुए.

1948 के ओलंपिक के बारे में कुछ और

1948 के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में, कोई ओलंपिक गांव नहीं था, न ही कोई नया स्टेडियम था. वहां कोई भी असाधारण मनोरंजन नहीं था. लंदन अभी भी द्वितीय विश्व युद्ध से खंडहर था.

सड़कें बम के मलबे से ढंकी थीं और भोजन, कपड़े और गैसोलीन की कमी थी. कई घरों में पानी नहीं था. इन सभी कठिनाइयों के बावजूद, लंदन ने छोटे बजट पर एक अविस्मरणीय ओलंपिक आयोजित किया और दो साल से कम समय में उसकी तैयारी की.

लंदन में जो कुछ उपलब्ध था उन्हें उससे ही काम चलाना पड़ा. शहर का वेम्बली स्टेडियम - जो कुत्तों का रेसिंग ट्रैक था वो एक मुख्य स्पोर्ट्स स्टेडियम में बदला गया. आइस रिंक, स्विमिंग पूल बन गया. एथलीट स्कूलों, सैन्य आवास और निजी घरों में कैम्पिंग बेड पर सोते थे. कई को अपनी वर्दी खुद बनानी पड़ी और घर से अतिरिक्त भोजन लाना पड़ा. लंदन की बसों ने एथलीटों को वहाँ पहुँचाया जहाँ उन्हें जाना था. कई देशों ने इसमें मदद की. स्विट्जरलैंड ने जिमनास्टिक उपकरण दान किए, और फिनलैंड ने बास्केटबॉल के फर्श के लिए लकड़ी भेजी.

आज से अलग 1948 में, कई ओलंपिक एथलीट खेल में पूर्णकालिक अभ्यास नहीं करते थे.. उन पर दूसरी जिम्मेदारियां भी थीं. एथलीट प्रतिस्पर्धा करने के लिए अपनी पूर्णकालिक नौकरियों से समय निकालते थे. कुछ युद्ध में भी लड़े थे. कुछ माँ और शिक्षक थे, और उनमें एक संगीतज्ञ, पियानोवादक था.

वर्तमान ओलंपिक और उनके मेजबान शहर के बड़े बजट होते हैं और वो वर्षों पहले से उनकी तैयारियां करते हैं. 1948 के खेल नाटकीय रूप से अलग थे. 1948 के ओलंपिक में धन का अभाव था, पर जोश, भावना, बलिदान और आशा ने उसे पूरा किया.

समाप्त